भारतीय चित्रकला में निरूपित मानवाकृति का क्रमिक विकास- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन(अजन्ता से मध्यकाल 1550 ई0 तक)

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा से चित्रकला विषय में

पी-एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक

डा0 सोनिका
असिस्टेंट प्रोफेसर,
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग

शोधार्थी

रेनू वर्मा

चित्रकला विभाग, कला संकाय,

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा

2022

शोध संरचना

- शोध संकल्पना 1-2
- सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन 2-3
- परिकल्पना 3-4
- उद्देश्य 4
- चर 4
- कार्य प्रणाली 4-5
    - अनुसंधान अभिकल्प
    - प्रदत्त संकलन
- प्राथमिक स्त्रोत
- द्वितीयक स्त्रोत
    - प्रतिदर्श का आकार
    - सीमाएँ
- निष्कर्ष 5
- वर्तमान परिदृश्य में अध्ययन की प्रासंगिकता 5-6

शोध संकल्पना

भारतीय कला अत्यन्त विस्तृत, मनोहारी और गूढ़ है। इसका इतिहास सहस्त्रों वर्षो पुराना है। इतिहास के पृष्ठ आज भी इसका प्रमाण हैं। हर युग में हर सदी में रूचि ,रीति और शैली द्वारा आकारों में आए इन परिवर्तनों का इतिहास ही, कला का इतिहास है।

कला का मूल आधार 'रूप' है। चित्रभूमि पर अंकन आरम्भ करते ही रूप का निर्माण हो जाता है। आकार, रेखा आदि रूपात्मक तत्वों द्वारा गठित एंव सौन्दर्य क्षमता से युक्त तथा अभिव्यक्ति पूर्ण प्रभावोत्पादक स्वरूप को 'रूप' कहते हैं।

मानव रूप मानव की भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। हीगल, कान्ट आदि दार्शनिकों ने मानव को ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति माना है। भारतीय कला में मानव रूप मानव का आविर्भाव बाह्य आकृति की प्रेरणा से ही नहीं हुआ, अपितु साधना के बल से चित्रकार के मानस में उसकी आध्यात्मिक अनुभूति से हुआ है। रूप दर्शन की अनूभूति को तीव्र और स्पष्ट बनाता है। कला में कलाकार अपने भावों को अभिव्यक्त करता है और यह अभिव्यक्ति मानव रूप द्वारा ही श्रेष्ठतम हो सकती है। भारतीय कला परम्परा में मानव रूप को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना है। यहाँ तक कि कला व साहित्य में प्रकृति के विविध जड़ रूपों का भी मानवीकरण कर दिया गया है, तभी तो हिमालय, गंगा, आकाश एवं सागर सभी मानव रूप में प्रकट हो मानवोचित अभिव्यक्ति कर सके हैं।

इतिहास से भी पूर्व कला का अस्तित्व आज प्रागैतिहासिक कला के रूप में प्राप्त है। कला का यह आरम्भिक युग अत्यन्त धूमिल सुदूर है। इस लम्बी समयावधि के बाद मानव चित्र रूपों में सजीवता के दर्शन होते हैं, तो वह अजन्ता के चित्रों में अजन्ता से परिकल्पना पर आधारित वास्तविक मानव रूपाकृतियों में निरन्तर शारीरिक संरचना के विकास की शुरूआत हमें देखने को मिलती है।

मानव का सहज स्वभाव है, अपनी दिनचर्या को स्थायी रूप देना और अपने अतीत को विस्मृत न होने देना। धार्मिक भावना से प्रेरित होकर अन्य रूप के साथ मानव के रूप अंकन हुआ, बस़ यही से चित्रकला के अंतर्गत

ऐतिहासिक प्रमाणों में मानव के रूप का प्रयोग सम्भव हो सका, मानवाकृति चित्रित करने का यही यथार्थ रूप मानव का प्रथम प्रयास था। इसके पश्चात् ही कलाकार द्वारा मानव जैसी आकृतियों के रूप का चित्रण सम्भव हो सका, तभी से लेकर यह प्रयास क्रमिक रूप से चलता ही रहा।

भारत विश्व में एक भौगोलिक इकाई होने के साथ ही एक विशाल देश भी है । इसी से यहाँ की कला पर विभिन्न युगों में सामाजिक व संास्कृतिक परिवर्तनों का भी प्रभाव पड़ता रहा । साथ ही विभिन्न प्रान्तों में लोक परम्परा के आधार पर कला का क्षेत्रीय विकास भी हुआ है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में जिन पाँच प्रकार के पुरूषों का उल्लेख मिलता है, यह मानव जाति और क्षेत्रीय आधार पर ही सम्भव हुआ है। भारतीय चित्रकला-परम्परा में भी विभिन्न शैलियाँ कहीं-कहीं क्षेत्रीय आधार पर उभरी हैं।

शिल्प शास्त्रों में वर्णित संज्ञा ”चित्र“ का अर्थ ही वर्तमान मूर्ति से है। चित्रार्ध तथा चित्राभास संज्ञा मूर्ति और चित्र के घनिष्ठ सम्बन्ध की परिचायक है। लगभग 200 ई0 पूर्व से अजंता कला में शारीरिक रचना के आधार पर चित्र मिलते हैं। अजन्ता कला से लेकर यथार्थ मानव रूप उन्नत कला शैलियों तक होना स्वभाविक लगता है। परन्तु इतिहास विकास क्रम और व्यक्ति के जीवन विकास क्रम में बड़ा अन्तर रहता है। यदि देश में प्राप्त सभी सृजित मानव रूपों को एकत्र कर रूपों के आधार पर विकास क्रम का अध्ययन किया जाये तो सम्भवतः इतिहास साथ न दे। देश और काल की समस्याएँ क्रमबद्धता को भंग कर दें । तथापि कला की विद्यार्थी होने के कारण रूप के विकास का अध्ययन करना मेरा ध्येय है। गुप्त कालीन देव रूप से पश्चिमी भारतीय पोथी चित्रों और मध्यकालीन 1550 ई0 तक के चित्रों की यात्रा करना मेरा ध्येय है। कलाकार की शैली के प्रत्येक बढ़ते कदम को देखना मेरी राह होगी इतिहास की पगडंडी यदि कहीं छूट भी जाय तो क्षम्य होगी ऐसी मेरी धारणा है।

प्रस्तावित अध्ययन को अजंता से ही नियोजित किया गया है तथापि मध्यकाल 1550 ई0 तक सीमा रेखा में सीमित कर दिया गया है, इसका एक कारण यह है कि अजंता भिति चित्रों से लेकर मध्यकाल तक मानव रूपाकृतियों में निरंतर क्रमिक विकास होता रहा । इस काल के उपरान्त मानव रूप निर्धारित हो गये और

अनुपात और शरीरिक संरचना में एक जैसे बनने लगे थे। अतः प्रस्तुत अध्ययन में मानव रूप के विकास क्रम को भारतीय कला में मात्र मध्यकाल 1550 ई0 तक ही शोध सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाएगा।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

किसी भी शोधकार्य का आरम्भ करने से पूर्व उससे सम्बंधित साहित्य का अवलोकन करना अनिवार्य है। मेरे शोधकार्य का विषय ''**भारतीय चित्रकला में निरूपित मानवकृति का क्रमिक विकास-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"** है। अपने विषय से सम्बधित मैंने अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया। जिनसे मुझे शोध विषयक सामग्री एकत्र करने में सहायता मिली । **रायकृष्ण दास** की पुस्तक ''**भारतीय चित्रकला**'' व **वासुदेवशरण अग्रवाल** की पुस्तक **"भारतीय कला"** से मैंने भारतीय कला इतिहास की जानकारी प्राप्त की। **कमलेश दत्त पाण्डे** की पुस्तक ''**भारतीय चित्रकला**'' में नारी रूप विन्यास "से मानव आकृति व रूप का विवरण मिला। '**Mukul Chandra Dey**' की पुस्तक '**Pilgrimages to Ajanta & Bagh'** व **सरोज भार्गव** की पुस्तक "**अजन्ता में रूप सौंन्दर्य**" से अजन्ता व समकालीन कलाओं के रूप सौंन्दर्य के बारे में जाना। **नीलिमा शर्मा** की पुस्तक "**मध्यकालीन जैन पोथी चित्रों में रूप संसाधन**" से जैन चित्रों के रूपाकृतियों के कलात्मक विकास को जाना । इन पुस्तकों और अन्य सभी स्त्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर मैं भारतीय चित्रकला में निरूपित मानवाकृति का क्रमिक विकास-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन करूँगी साथ ही मानवकृति व रसाभिव्यक्ति का विवेचन प्रस्तुत करूँगी।

परिकल्पना

किसी भी शोधकार्य को करने से पूर्व शोधकार्य की सफलता हेतु परिकल्पना तैयार करना अतिआवश्यक है । परिकल्पना शोध कार्य की दिशा निर्देशित करती है। जिससे शोधार्थी अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर सके । कला इतिहास में मानव कला से जुड़े विभिन्न विषयों का निर्माण हुआ है उन्ही विषयों में से मानव रूप का चित्रांकन एक है। कला में यथार्थवादी मानव रूप अजन्ता से लेकर अब तक विभिन्न आयामों में दिखाई दे रहे हैं । जिसे देखने के पश्चात् मुझे चित्रकला में मानव रूप को और अधिक जानने की जिज्ञासा हुई इसलिए मैंने अपने शोध हेतु इस विषय को चुना। जिसमें मानव रूपाकृतियों के मानव आकृति के चित्रों में क्रमानुसार बदलते हुए रूपों के

विकास का अध्ययन करने का प्रयत्न करूँगी साथ ही साथ भ्रमण द्वारा मानव चित्रों से जुड़े क्षेत्र से जानकारी प्राप्त करूँगी ।

उद्देश्य

- भारतीय चित्रकला में मानवाकृतियों के महत्व पर प्रकाश डालना।
- मानवाकृति चित्रांकन में समय-समय पर आये परिवर्तनों को प्रकाश में लाना।
- अजन्ता भिति चित्रकला में मानवाकृति के स्वरूप का विवेचन करना।
- अजन्तेत्तर भिति चित्रों में मानवाकृति के स्वरूप का विवेचन करना।
- मध्यकाल में मानवाकृति के स्वरूप का अध्ययन करना ।
- मानवाकृति एवं रसाभिव्यक्ति का विश्लेषण करना।

चर

- विभिन्न कालों में मानवाकृति रूप
- कला के तत्त्व
- स्ंायोजन के सिद्धान्त
- रस सिद्धान्त

कार्य प्रणाली

अनुसंधान अभिकल्प - वस्तु विश्लेषण विधि के अन्तर्गत वर्णनात्मक अनुसंधान शोध प्रणाली में भारतीय चित्रकला में मानव आकृतियों के क्र्रमिक विकास का अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा ।

- **प्रदत्त संकलन-**
- **प्राथमिक स्त्रोत** - विभिन्न कालों में निरूपित मानवाकृतियों से संम्बधित चित्रों के छाया चित्र ।
- **द्वितीयक स्त्रोत** - पुस्तकें, प्रकाशित पत्र पत्रिकाऐं, समाचार पत्र, कैटलाॅग, वेबसाइट्स, शोध निर्देशक के साथ विचार-विमर्श, संग्रहालयों में भ्रमण आदि ।

- **प्रतिदर्श आकार** - भारतीय चित्रकला में निरूपित मानवाकृति का क्रमिक विकास-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित लगभग 150 से 200 छाया चित्र।
- **सीमाएँ** - कार्य सीमा को ध्यान में रखते हुए भारतीय चित्रकला के अर्तगत केवल मानवाकृति के क्रमिक विकास का अध्ययन करूँगी। मंैने अपने शोध को समय सीमा में बांधने हेतु उसे अजन्ता से लेकर मध्यकाल 1550 ई0 तक के काल में सीमित किया है।

निष्कर्ष- भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान है। रेखाओं के माध्यम से सभी प्रकार के रूपों का निर्माण हुआ है। इसमें मानव रूप भी समाहित है, जो कि आरम्भ से ही दिखाई देता है। कला में रूपाकृतियाँ कला का प्रधान अंग होती है। चाहे वह मानव, पशु, पक्षी, पेड़, पौधे आदि की आकृतियाँ ही क्यों न हों और सभी का कला में अपना अपना स्थान होता है। रूपाकृतियों के माध्यम से कलाकार चित्र का निर्माण करता है और इसमें रूप अपने महत्व को दर्शाते है। दृश्य कलाओं में मानव आकृतियाँ अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। किसी भी चित्र के मूल में रूप एवं रस की सत्ता होती है। रूप एवं रस और सौन्दर्य का बोध मानव मन की स्वभाविक प्रक्रिया है। अजन्ता की गुफाएँ इसी का साक्षात् उदाहारण हैं। सुदृढ-व सुडौल रेखाओं से भावभिव्यक्ति का गहराई से अंकन किया गया है। वस्तुतः भाव प्रवणता ही अजन्ता की आत्मा है। यहाँ रूपों में पुरूष रूप् ,नारी रूप एवं बाल रूप की अभिव्यंजना की गयी है। अजन्तेर कला अन्तर्गत बाघ, बादामी, सित्तनवासल और सिगिरिया की कला पर तो प्रत्यक्ष रूप से ही इन रूपों तथा आकारों का प्रभाव रहा ।

मध्यकालीन पाल शैली, अपभ्रंश व जैन शैली में भी रूपों व उनके आकरों की विशिष्टता दृष्टिगत होती है। इस प्रकार भारतीय चित्रकला में रूप विन्यास अत्यन्त विशिष्ट रहा है।

आधुनिक युग में अध्ययन की प्रांसगिकता

भारतीय चित्रकला में रूप विन्यास का महत्व एवं मानव आकृतियों का योगदान है तथा उनका एक विकास क्रम है। चित्रकला के दृष्टिकोण से मानव रूप व उनका क्रमिक विकास महत्वपूर्ण अंग है। मैं इसे अपने शोध कार्य के

माध्यम से उजागर कर प्रकाश में लाने का प्रयास करूँगी जो आगे आने वाले शोधार्थियों के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा।

विषयानुक्रमणिका

प्रस्तावना-

अध्याय प्रथम- भारतीय चित्रकला में मानवाकृतियों का महत्व

अध्याय द्वितीय- अजन्ता भिति चित्रकला में मानव आकृति

2.1- पुरूष रूपाकृति

2.2- स्त्री रूपाकृति

2.3- बाल रूपाकृति

अध्याय तृतीय- अजन्तेत्तर भिति चित्रों में मानव आकृति

3.1 - बाघ

3.2- बादामी

3.3- सित्तनवासल

3.4- सिगिरिया

अध्याय चतुर्थ- मध्यकाल (1550 ई0 तक) में मानव आकृति

4.1- पाल शैली

4.2- अपभ्रंश शैली

4.3- जैन शैली

अध्याय पंचम- मानवाकृति एवं रसाभिव्यक्ति

उपसंहार

परिशिष्ट-

1.सन्दर्भ ग्रंथ सूची

2. **<u>BIBLIOGRAPHY</u>**

3.पत्र-पत्रिकायें

4.वेबसाइटस्

5.कला शब्दकोश व अन्य

6.मानचित्र एवं चित्रसूची

अनुसंधान अभिकल्प

प्रस्तावना के अन्तर्गत मैं चित्रों में बनी मानव आकृतियों के महत्व को समझाऊँगी।

प्रथम अध्याय में मैं भारतीय चित्रकला में मानव आकृतियों के महत्व का अध्ययन करूँगी।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत अजन्ता की गुफाओं की भित्तियों पर बनी मानव रूपाकृतियों पुरूष, में स्त्री व बाल आकृतियों के क्रमिक विकास का अध्ययन करूँगी ।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत अजन्ता गुफा चित्रों के बाद की अन्य गुफाओं बाघ, बादमी, सित्तनवासल एंव सिगरिया की भित्तियों पर बनी मानव रूपाकृतियों के क्रमिक विकास का अध्ययन करूँगी।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत मध्यकालीन पाल, अपभ्रंश तथा जैन शैलियों में बनी मानव आकृतियों के क्रमिक विकास का अध्ययन करूँगी।

पंचम अध्याय में निरूपित मानव आकृतियों के अन्तर्गत रसों की विवेचना का अध्ययन करूँगी।

उपसंहार रूपाकृतियों के माध्यम से कलाकार चित्र का निर्माण करता है और इसमें रूप अपने महत्व को दर्शाते हैं, अपितु दृश्य कलाओं में मानव आकृतियाँ अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

दिनांक शोधार्थी

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.उपाध्याय,भगवत शरण, (1980), भारतीय कला की भूमिका, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली

2 खरे,महेश्वरी दयाल (1971), बाघ की गुफाएँ, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

3 गैरोला वाचस्पति (1972), भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, इलाहाबाद

4 चतुर्वेदी, गोपाल मधुकर (1996,) भारतीय चित्रकला, इलाहाबाद

5 झा, शशि(1992,) भारतीय चित्रकला और मूर्ति कला में नारी स्वरूप मानसी प्रकाशन,39, कैलाशपुरी, मेरठ- 2

6 दास, रायकृष्ण (1972,) भारत की चित्रकला, भारती भण्डार,इलाहाबाद

7 द्विवेदी ,प्रेम शकर, भारद्वाज,(1996),भारतीय चित्रकला में व्यक्ति चित्रण, मनीष प्रिन्टिंग

राधा कृष्ण प्रेस ,न्यू साकेत कालोनी ,वाराणसी

8 भरतमुनि (1950,) नाट्यशास्त्र, कलकत्ता

9 भानुदत्त (1974),रसतरंगिणी, मुंशी लाल मनोहर लाल पब्लिशर्स, नई दिल्ली

<u>BIBLIOGRAPHY</u>

1.Acharekar M.R., 1971 , Rupadarshini , D.B. - Taraporewala son Sons&Co. Pvt. Ltd., Bombay.

2.Agrawal, V.S.1965, Indian Art Prithivi Prakashan Varanasi.

3.Anand,Mulak Raj1973, Album of Indian Painting, National Book Trust of India.

4.Brown, Percy1965,Indian Painting, Y.M.C.A. Publishing House, New Delhi.

5.Coomaraswamy, A.K 1971,Yaksas (Part I & II) Munshi Ram Manohar lal, New Delhi.

6.Desh,Prabhu, S.B. 1969,Human form in Indian Art Asia Press, Delhi.

7.Dhavalikar, M.K. 1973, Ajanta a culture Study University of Poona.

8.Ghosh A.(Ed.) 1974,Jain Art and Architecture, Vo1.I, II, III,Bhartiya Jnanpith, New Delhi.

Internet website

http:/www.Goole.com.in/images?

http:/www.ncb.in.lm.nih.gov/pmc/articlas/pmc/2815939

http:/www.books.google.com.in /book

http:/www.margfoundation.com

http:/www.Marg magazine.com

http://www.indian-heritage.org/painting/ajanta/phase16.html

http://www.indian-heritage.org/painting/ajanta/ajanta11.html

http://www.slideshare.net/swami99/-paintings

http://artaksha.blogspot.in/2013/10/Perfect-from-all-sides.htm ।

पत्र पत्रिकायें

- कला निधि पाँच अंक, कला भवन वाराणसी
- नागरी प्रचाराणी पत्रिका, नागरी प्रचारणी सभा, काशी
- मध्यभारती- सागर विश्वविद्यालय शोध पत्रिका
- सम्मेलन पत्रिका, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

परिशिष्ट - चित्रसूची

गुफा सं0 1 बोधिसत्व पद्मपाणि

चित्र सं0 2 अवलोकितेश्वर (पाल चित्र शैली – 11वीं शताब्दी)

चित्र सं0 3 कामदेव रतिरहस्य(जैन शैली)

चित्र सं0 4 अप्सरा (सिगिरिया–लगभग 5वीं शताब्दी)